P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# हिन्द महासागर में चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत की रणनीति

**हिन्दुराम**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
गायत्री महाविद्यालय,
सांचौर, जालौर,
राजस्थान, भारत

**सारांश**

हिन्द महासागर सामरिक दृष्टि से भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, यहाँ पर होने वाली हर गतिविधि से भारत प्रभावित होता है। हिन्द महासागर के आर्थिक, राजनीतिक, रणनीतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व में वृद्धि हो रही है। समुद्रपारीय भारतीय समुदाय की हिन्द महासागर के देशों में सशक्त उपस्थिति है। पिछले कुछ दशकों से चीन हिन्द महासागर में अपना वर्चस्व बढा रहा है। चीन अपनी पनडुब्बियों का आवागमन हिन्द महासागर के क्षेत्र में बढ़ा रहा है, चीन हिन्द महासागर में अपना आर्थिक वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। चीन भारत को चारो ओर से घेर देने की नीति 'मोतियों की माला' के तहत चीनी सेना के नेवल बेस हिन्द महासागर के देशों में पोर्ट विकसित कर रही है। भारत के पड़ोसी देशों में बन्दरगाहों का रिंग नेटवर्क बनाकर भारत के घेरे वाले देशों के साथ सैन्य रिश्ते बढ़ाकर चीन ने भारत के दायरे में अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। चीन की हिन्द महासागर में बढ़ती आक्रामकता को देखते हुए भारत ने अपनी सशक्त नौ–सैन्य उपस्थिति दर्ज की है। भारत ने हिन्द महासागरीय तटीय देशों में लोकतांत्रिक सरकारों का समर्थन किया। इन देशों के साथ भारत ने अपने राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक, सम्बन्धों का विस्तार किया। भारत एशियाई, अफ्रिकी राष्ट्रों के साथ मिलकर हिन्द महासागर के लिए एक सामूहिक सुरक्षा का फ्रेमवर्क तैयार कर रहा है। भारत ईरान के चाबहार से लेकर अजम्पशन द्वीप (सेशेल्स) तक भारतीय नौ–सैना बेस विकसित कर रहा हैं।

**मुख्य शब्द :** भू–राजनीतिक केन्द्र, सुरक्षा निगरानी तंत्र, मेरिटाइम सिल्क रोड़, यथार्थवादी नीतियॉ, शांति का क्षेत्र

**प्रस्तावना**

अल्फ्रेड महान का वो कथन सही साबित होता जा रहा है कि ''जो हिन्द महासागर पर नियंत्रण रखेगा वह एशिया पर प्रभुत्व स्थापित कर लेगा।'' वर्तमान दौर में हिन्द महासागर अन्तर्राष्ट्रीय भू–राजनीतिक केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। हिन्द महासागर के आर्थिक, राजनीतिक, रणनीतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व में वृद्धि हो रही है। हिन्द महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। इसके उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका, उत्तर–पूर्व में हिन्द–चीन तथा दक्षिण में अंटार्कटिका महाद्वीप अवस्थित है। हिन्द महासागर चार महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों – स्वेज नहर, बाब–अल–मंदेव जल सन्धि, हार्मुज जल सन्धि, मलक्का की खाड़ी का स्रोत होने के अलावा मध्य–पूर्व, अफ्रीका एवं पूर्वी एशिया को उत्तर–दक्षिण अमेरिका से जोड़ता है। विश्व का 80 प्रतिशत से ज्यादा समुद्री तेल व्यापार हिन्द महासागर के रास्ते ही होता है। खनिज उत्पादन की दृष्टि से भी यह क्षेत्र समृद्ध है।[1]

वर्तमान समय में हिन्द महासागर वैश्विक ऊर्जा व्यापार के साथ–साथ पाइरेसी और आतंकवाद जैसी वैश्विक समस्याओं का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। इसी के मद्देनजर अमेरिका, फ्रांस, चीन, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया आदि ने अपने युद्ध पोतों को सोमालियाई अनन्य आर्थिक क्षेत्र में लगाया है। डिएगो गार्शिया में अमरीका ने सुरक्षा निगरानी तंत्र स्थापित किया है। हिन्द महासागर अब भारत और चीन जैसी उभरती महाशक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा का अखाड़ा बनता जा रहा है। चीन अपनी 'मेरिटाइम सिल्क रोड' पहल के आधार पर इस क्षेत्र में बढ़त बनाने का प्रयास कर रहा है तो वही भारत के लिए यह क्षेत्र सामरिक–राजनैतिक व आर्थिक गतिविधियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**हिन्द महासागर का भारत के लिए महत्व**

भारत शुरुआत से ही हिन्द महासागर को शांति का क्षेत्र बनाना चाहता है। भारत इस क्षेत्र में महाशक्तियों के संघर्ष का हमेशा विरोधी रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के आरम्भिक दशकों में भारत ने अपनी थल सेना को मजबूत करने का प्रयास किया। नौ सेना की तरफ उतना ध्यान नहीं दिया। 70 के दशक से भारत ने यथार्थवादी नीतियाँ अपनाना शुरु कर दिया एवं गुटनिरपेक्ष देशों के माध्यम से इसे 'शांति का क्षेत्र' घोषित करने पर बल दिया। अन्ततः 16 दिसम्बर, 1971 को संयुक्त राष्ट्र के 26वें अधिवेशन में इसे 'शांति का क्षेत्र' घोषित कर दिया। शीत युद्ध के दौरान यह क्षेत्र अमेरिका तथा सोवियत् संघ के बीच शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र बना रहा जबकि भारत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से इस क्षेत्र में सैन्यीकरण के विरुद्ध आम सहमति स्थापित करना चाहता था। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद 1990 के दशक में आए वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में राजनीतिक संघर्ष का स्थान आर्थिक सहयोग ने ले लिया तथा हिन्द महासागर क्षेत्र में निरन्तर संतुलित विकास, व्यापार, सेवा विकास, पूंजी निवेश एवं तकनीकी सहयोग के उद्देश्य से इस क्षेत्र के 14 देशों ने मिलकर 6 मार्च, 1997 को इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन की स्थापना की वर्तमान में इस संगठन के कुल सदस्य 22 है।[2]

ऊर्जा व्यापार की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत द्वारा खाड़ी देशों से तेल एवं ऊर्जा आयात के अतिरिक्त खनिज संसाधन की दृष्टि से भी यह क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्द महासागर सामरिक दृष्टि से भी भारत के लिए महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में जो भी गतिविधि होती है। भारत उसे जरूर प्रभावित होता है अर्थात् इस क्षेत्र की कोई भी गड़गड़ी भारत को त्वरित खतरा पहुँच सकता है। मुम्बई आतंकी हमले के बाद हिन्द महासागर क्षेत्र पर भारत की रणनीतिक नजर और पैनी हो गई है। पाइरेसी की समस्या हो या आतंकवाद इस क्षेत्र में भारत की सामरिक स्थिति उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है।

सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से भी हिन्द महासागर देशों के साथ हमारे संबंध पुरातन काल से है। इसके अलावा, समुद्र–पारीय भारतीय समुदाय की हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों में सशक्त उपस्थिति है जैसे श्रीलंका, सेशल्स, मॉरीशस....।[3]

विगत कुछ दशकों से चीन हिन्द महासागर में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। शुरुआत से ही चीन की प्रवृत्ति हिन्द महासागर में अमेरिकी वर्चस्व को कम करने एवं भारत को प्राप्त स्वाभाविक भू–सामरिक लाभों में कटौती करने की रही है। चीन अपनी पनडुब्बियों का लगातार आवागमन हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ा रहा है। चीन अपना आर्थिक वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य से या भारत को चुनौती देने के दृष्टिकोण से वह हिन्द महासागर को दक्षिण चीन सागर की तरह ही देखना चाहता है। 2015 में चीनी सेना ने कहा था कि– ''भारत को हिन्द महासागर को अपना बैकयार्ड नहीं समझना चाहिए, ऐसी किसी भी तरह की सोच भारत के लिये उचित नहीं है।''[4]

चीन की हिन्द महासागर को लेकर यह रणनीति रही है कि वह भारत की प्राकृतिक अवस्थिति से उत्पन्न लाभों को कैसे चुनौती दी जाए या उन लाभों में कटौती की जाए। चीन बिना किसी सूचना के कोलम्बो, कराची में अपनी पनडुब्बी को उतारता है। वहीं पाकिस्तान के साथ इस संदर्भ में भारत की चिंता व्यापक है। एक तरफ पाकिस्तान के साथ हमारे द्विपक्षीय सम्बन्ध खराब हैं, दूसरा चीन–पाक आर्थिक कॉरिडोर भी भारत के आर्थिक हितों को नुकसान पहुँचा सकता है। चीन ने अपने सैन्य रणनीतिक श्वेत–पत्र में स्पष्ट किया कि चीन हिन्द महासागर में ज्यादा से ज्यादा नौ सैनिक उपस्थिति दर्ज करेगा।

चीन की रणनीति भारत को चारों ओर से घेर देने की नीति 'मोतियों की माला' के तहत चीनी सेना की नौ सैनिक इकाई द्वारा हिन्द महासागर के देशों में नेवल बेस या पोर्ट विकसित कर भारत को लगातार घेर रहा है। चीन अपनी रणनीति के तहत पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, मालदीव, म्यांमार जैसे देशों के साथ सन्धि और द्विपक्षीय सहयोग (व्यापार और निवेश) के जरिये प्रवेश कर रहा है। भारत के पड़ोसी देशों में बंदरगाहों का रिंग नेटवर्क बनाकर भारत के घेरे वाले देशों के साथ सैन्य रिश्ते बढ़ाकर चीन ने भारत के दायरे में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। चीनी कंपनियों ने पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह, चटगांव (बांग्लादेश), हम्बनटोटा (श्रीलंका) सीत्तवे पोर्ट (म्यामांर) मराओ पोर्ट (मालदीव) आदि में अवसंरचना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।[5]

चीन ने दक्षिण एशिया में जिन बंदरगाहों को विकसित किया वहाँ अभी तक कोई व्यावसायिक गतिविधियां न के बराबर है। चीन 'सिल्क रोड पहल' या 'वन बेल्ट वन रोड' के माध्यम से एक पूर्वी एशियाई शक्ति से ऊपर उठकर एक वैश्विक शक्ति बनना चाहता है। चीन अपनी इस नीति से हिन्द महासागर में व्यावसायिक घुसपैठ बना लेना चाहता है। चीन ने पाकिस्तान को अपने समुद्री व स्थलीय रेशम मार्ग का केन्द्रीय लिंक बना दिया है। चीन भारत की चिंताओं को दरकिनार कर पाक अधिकृत कश्मीर से चीन आर्थिक कॉरिडोर निकाल रहा है। चीन की रणनीति में अन्तर इतना है कि जब दक्षिण चीन सागर में भारत–वियतनामी गठबंधन का सख्त विरोध करता है। वही हिन्द महासागर में भारत को घेरना चाहता है। इस सन्दर्भ में चीन का दृष्टिकोण है कि तुम्हारा सागर हम सभी का सागर है और मेरा सागर सिर्फ मेरा है।'' जो नीति चीन हिन्द महासागर के सन्दर्भ में अपनाना चाहता है वही मापदंड दक्षिण चीन सागर के सन्दर्भ में लागू करने की बात नहीं करता। चीन हिन्द महासागर में मित्रता खरीदने की नीति अपना रहा है। जैसा कि चीनी विचारक यान युवेतुंग का कथन है– ''हम उन्हें आर्थिक रूप से लाभान्वित करते हैं और बदले में हम अच्छे राजनीतिक रिश्ते प्राप्त करते हैं।''[6]

चीन भारत के पड़ौसी देशों में आधारभूत विकास के नाम पर ऋण ग्रस्तता का शिकार बना रहा है। चीन नौ–सैनिक अभ्यास के द्वारा अपनी नौ–सैनिक शक्ति प्रदर्शन कर रहा है। चीन को भारत के नाम पर इस

महासागर (हिन्द महासागर) का नाम रखने पर भी आपत्ति है हालांकि इसय नामकरण के पीछे परम्परागत व भौगोलिक कारक रहे हैं।

चीन न केवल हिन्द महासागर अपितु दक्षिण चीन सागर पर भी अपनी धौंस दिखा रहा है। हेग स्थित परमानेंट कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन द्वारा दक्षिण चीन सागर पर दिए फैसले को मानने से इन्कार कर दिया इससे साफ जाहिर होता है कि चीन इस अवज्ञात्मक पक्ष के जरिये वह स्वयं को एक महाशक्ति सिद्ध करने और एक नई विश्व व्यवस्था को थोपने की कोशिश कर रहा है। भारत और वियतनाम इस क्षेत्र में तेल एवं प्राकृतिक गैसों के अन्वेषण के लिए परस्पर सहयोग कर रहे हैं जिसका भारी विरोध चीन द्वारा किया जा रहा है। भारत के लिये दक्षिणी चीन सागर केवल आर्थिक विकास या व्यापार तक सीमित नहीं है बल्कि इसके सामरिक पक्ष भी हैं। यह रूट हिन्द महासागर को प्रशान्त महासागर से जोड़ता है इसलिये इस रूट पर बसे उन तमाम देशों के साथ भारत का द्विपक्षीय या बहुपक्षीय संबंध इस इलाके में न केवल शांति से जुड़ा हुआ है बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि इस रूट पर किसी देश की दादागिरी न हो क्योंकि भारत का लगभग 55 प्रतिशत व्यापार इसी रूट से होता है जो भारत के हितों के लिए महत्त्वपूर्ण बना हुआ है।

**भारत सरकार की हिन्द महासागरीय नीति**

90 के दशक से ही भारत की समुद्री अभिरूचि में विस्तार हुआ है। अदन से मलक्का एवं स्वेज से दक्षिण चीन सागर हमेशा राष्ट्रीय सुरक्षा के केन्द्र में रहे हैं। 2008 से एंटी–पाइरेसी गतिविधियों, भूमध्यसागर से राहत कार्य तथा अन्य कार्यों में भारत ने अपनी सशक्त नौ सैन्य उपस्थिति दर्ज की है। भारत ने हमेशा से ही हिन्द महासागर के तटीय देशों में लोकतांत्रिक सरकारों का समर्थन किया है। इन देशों के साथ भारत ने व्यापार वाणिज्य सुविधाओं का विस्तार किया है। जिस प्रकार हिन्द महासागरीय तटीय देशों में चीन प्रवेश कर रहा है वहाँ पर आर्थिक एवं सैन्य दखल दिया जा रहा है। भारत उसका सामना पूर्ण रूप से कर रहा है। ज्यादा से ज्यादा समुद्री जहाजों और बंदरगाहों का निर्माण और ब्लू वॉटर नेवी को मजबूती से तैयार करना भारत एशिया, अफ्रीका राष्ट्रों के साथ मिलकर हिन्द महासागर के लिये एक सामूहिक सुरक्षा का फेमवर्क तैयार कर रहा है।

हिन्द महासागरीय क्षेत्र के देशों के साथ अपनी नृजातीय–सांस्कृतिक मैत्री को सशक्त बनाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में सभी सार्क देश सदस्य तथा गैर–सार्क सदस्य मॉरिशस के प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया था।

भारत चीन की 'मोतियों की माला' नीति की चुनौती का समाधान रूपी ईरान के चाबहार बंदरगाह को विकसित कर रहा है। यह ओमान की खाड़ी के पास होर्मुज जल सन्धि के मुहाने पर स्थित है। यह हिन्द महासागर तक सीधी पहुँच रखने वाला गहरे पानी का एकमात्र ईरानी बंदरगाह है। यह ग्वादर से मात्र 72 कि. मी. दूर स्थित है। ग्वादर बंदरगाह पर चीनी उपस्थिति को भारत द्वारा विकसित चाबहार बंदरगाह द्वारा प्रति सन्तुलित किया जा सकता है। चाबहार बंदरगाह से अफ्रीकी तट के आस–पास होने वाली समुद्री पाइरेसी को रोकने के लिये नौ–सैनिक अभियानों का संचालन किया जा सकता है।[7]

अजम्पशन द्वीप (सेशेल्स) को भारतीय नौ–सेना बेस विकसित कर रहा है जिसे हिन्द महासागर में भारत को रणनीतिक लाभ प्राप्त होगा। हाल ही में श्रीलंका की सरकार ने हम्बनटोटा बंदरगाह को अपनी 70 प्रतिशत हिम्मेदारी चीन सरकार की कंपनी चाइना मर्चेंट पोर्ट होल्डिंग कम्पनी को 99 वर्षों की लीज पर दिया गया जिसका भारत ने विरोध किया। भारत ने मॉरिशस के अगालेगा द्वीप के सैन्य उपयोग के लिए समझौता किया है।

भारत के चीन के साथ सीमा विवाद मेरीटाइम सिल्क रोड़ चीन–पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर तथा अन्य कई व्यापारिक आर्थिक विवादित मुद्दे हैं। दोनों ही देश अपने आर्थिक हितों की तरफ ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं लेकिन हिन्द महासागर में भारत को चीन की तरफ से मिलने वाली चुनौती को कम नहीं आंका जाना चाहिए। भारत को अपनी दूरगामी रणनीतिक पहल कर शान्तिपूर्वक अपने हितों की पूर्ति करे तथा अपना कूटनीतिक कौशल का परिचय दे। प्रतिवर्ष दोनों ही महाशक्तियों के मध्य अनौपचारिक शिखर सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। गत सम्मेलन 27–28 अप्रैल, 2018 को चीन के वुहान में अनौपचारिक वार्ता हुई। जिसमें प्रधानमंत्री मोदी ने वार्ता में पाँच सूत्रीय एजेंडा दिया जिसमें समान दृष्टिकोण, बेहतर संवाद, मजबूत रिश्ता, साझा विचार और साझा समाधान पर बल दिया। एजेंडे की तुलना मीडिया ने नेहरू के पंचशील सिद्धान्त से की है। चीनी राष्ट्रपति शि जीनपींग ने कहा प्रधानमंत्री मोदी के एजेंडे से प्रेरणा लेकर वह भारत के साथ अपने सम्बन्धों को सहयोगपूर्ण बनाने के लिए तैयार हैं।

**निष्कर्ष**

भारत को वर्तमान में हिन्द महासागर में चीन द्वारा हो रही प्रत्येक गतिवधियों पर पैनी नजर रखते हुए अपनी दूरगामी नीतियों का निर्माण करना चाहिए। इनके अलावा भारत को हिन्दू महासागरीय तटीय देशों को साथ लेकर लोकतान्त्रिक मूल्यों में विश्वास बढ़ाकर अपने सामरिक सम्बन्धों को मजबूत बनाने चाहिए तथा छोटे देशों को आर्थिक, तकनीक सहयोग प्रदान कर साझे हितों को बढ़ावा दें।[8]

**अंत टिप्पणी**

1. *पाण्डेय, आर.एस. तथा दीक्षित, आर.के., भारत–विरोधी चीन के रणनीतिक दुश्चक्र के निहितार्थ एक मूल्यांकन, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2012, पृ. 34*
2. *उपाध्याय, अर्चना, भारत की विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 73*
3. *यादव, आर.एस., भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषण, किताब महल एजेन्सीज, इलाहाबाद, 2009*
4. *विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट 2015–16, नीति नियोजन एवं अनुसंधान प्रभाग विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली*
5. *दैनिक जागरण, 26 दिसम्बर, 2015*

6. *पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, एम. सी. ग्रॉ हिल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2015, पृ. 35*
7. *जैन, बी.एम., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007, पृ. 82*
8. *शुक्ल, कृष्णानंद, भारतीय उपमहाद्वीप में शांति स्थापना और विकास की संभावनाएँ, महावीर एण्ड संस, नई दिल्ली, 2015, पृ. 27*